N.Nosov

निकोलाई नोसोव

Rat-a-tat!

खट-खट! खट-खट!
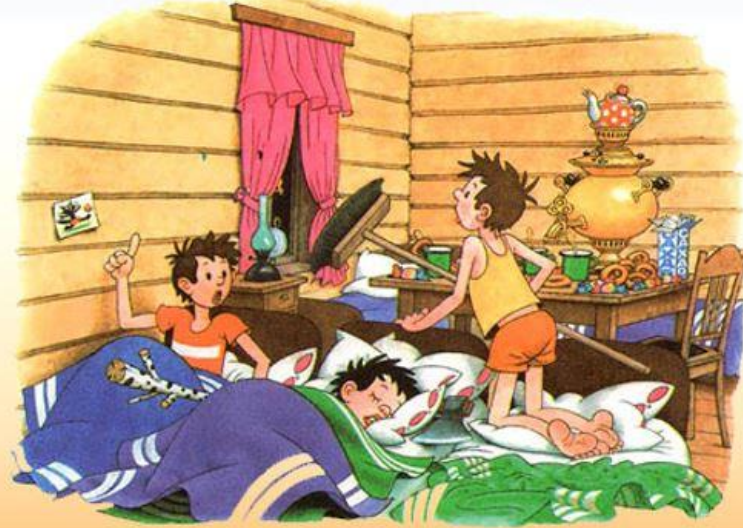
चित्र: जी.ओगोरोडनिकोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

मिश्का, कोस्त्या और मैं इस गर्मी में अपने पायनियर समूह के बाकी सदस्यों से एक दिन पहले ही गांव चले गए. हमें बाकी के आने से पहले उस स्थान को व्यवस्थित करने के लिए भेजा गया था. हमने अपने अग्रणी नेता वित्या से विनती की कि वो हमें पहले जाने दे क्योंकि हम जल्द-से-जल्द गांव पहुंचना चाहते थे.

वित्या हमारे साथ आया. जब हम पहुंचे तो वे सफाई का काम लगभग पूरा हो चुका था. फिर हमने तुरंत दीवारों पर तस्वीरें और रंगीन पोस्टर लगाने और रंगीन कागज की झंडी काटने का काम शुरू किया, जिन्हें हमने लड़ियों में पिरोया और छत से लटकाया. फिर हमने ढेर सारे फूल चुने और उन्हें खिड़की की चौखट पर रखे गुलदस्ते में सजा दिया. जब तक हमारा काम पूरा हुआ तब तक वो स्थान सच में काफी अच्छा लग रहा था.

शाम को वित्या शहर वापस चला गई. फिर हमारे घर के बगल में एक छोटी सी झोपड़ी में रहने वाली और कैंप की देखभाल करने वाली मरिया मैक्सिमोव्ना आईं और उन्होंने हमें रात में अपने घर में ठहराने के लिए बुलाया. उन्हें लगा कि एक खाली घर में हमें अकेले सोने में डर लगेगा. लेकिन मिश्का ने उनसे कहा कि हम किसी भी चीज़ से नहीं डरते थे.

जब मरिया मक्सिमोव्ना चली गईं, तो हमने समोवर जलाया और फिर पानी उबलने तक आराम करने के लिए दरवाजे पर बैठ गए.

गांव में कितना अच्छा माहौल था! घर के बगल में ऊंचे-ऊंचे रोवन के पेड़ थे और बाड़ के ऊपर बड़े-बड़े नीबू के पेड़ों की एक कतार थी. वे पेड़ बहुत ऊंचे और बहुत पुराने थे. नीबू के पेड़ों की शाखायें कौवों के घोंसलों से भरी हुई थीं और कौवे हर समय जोर-जोर से कांव-कांव करते हुए पेड़ों पर मंडराते रहते थे. वहां की हवा मुर्गों की कूकड़ू-कूं से भरी थी. कौवे सभी दिशाओं में घूमते थे. कुछ कौवे दीवार से टकराकर स्तब्ध होकर ज़मीन पर गिर पड़े थे. फिर मिश्का ने स्तब्ध कौवों को इकट्ठा किया और उन्हें एक बक्से में रख दिया.

सूरज जंगल के पीछे डूब गया और बादल ऐसे लाल हो थे गए मानो उनमें आग लग गई हो. वो इतना सुंदर नज़ारा था कि अगर मेरे पास मेरा पेंटबॉक्स होता तो मैं निश्चित रूप से उसी समय उसका एक चित्र बनाता जिसमें ऊपर गुलाबी बादल होते और नीचे हमारा समोवार होता. हमारे समोवार की चिमनी से निकलने वाली भाप, जहाज की चिमनी से निकलने वाले धुएं की तरह लग रही थी.

थोड़ी देर बाद आसमान से लाल चमक गायब हो गई और बादल, भूरे पहाड़ों जैसे दिखने लगे. सब कुछ इतना अलग लग रहा था कि हमें लगा जैसे हम किसी अजनबी जादुई देश में पहुंच गए थे.

जब समोवार उबल गया तो हम उसे अंदर ले गए. हमने लैंप जलाया और चाय पीने बैठ गए. खुली खिड़कियों से पतंगे उड़कर अंदर आने लगे और लैम्प के चारों ओर नाचने लगे. शांत, खाली घर में अकेले बैठकर चाय पीना, मेज पर समोवार की हल्की-हल्की फुसफुसाहट सुनना बड़ा अजीब और रोमांचक था.

चाय के बाद हमने सोने की तैयारी की. मिश्का ने दरवाज़ा बंद कर दिया और हैंडल को डोरी से कसकर बांध दिया.

"वो तुमने किस लिए किया?" मैंने उससे पूछा.

"जिससे चोर अंदर नहीं आयें."

हम उस पर हंसे. "डरो मत, यहां आसपास कोई चोर नहीं हैं," हमने उससे कहा.

"मैं चोरों से डरता नहीं," उसने कहा, "लेकिन कभी क्या हो जाए यह किसी को नहीं पता. बेहतर होगा कि हम भी खिड़कियां भी बंद रखें."

हम उस पर हंसे, लेकिन सुरक्षित रहने के लिए हमने खिड़कियां भी बंद कर दीं. हमने अपने बिस्तर एक साथ लगाए ताकि हम पूरे कमरे में बिना चिल्लाए बातें कर सकें.

मिश्का ने कहा कि वो दीवार के पास सोएगा.

"तुम चाहते हो कि चोर पहले हमें मार डालें, क्यों ऐसा है क्या?" कोस्त्या ने कहा. "ठीक है, हम भी नहीं डरते हैं."

लेकिन इससे भी उसकी संतुष्टि नहीं हुई. बिस्तर पर सोने से पहले वो रसोई से एक चाकू लेकर आया और उसने उसे अपने तकिए के नीचे छिपा दिया. कोस्त्या और मैं अपनी हंसी रोक नहीं पाए.

"देखो, तुम गलती से हमारा सिर मत काट देना!" हमने उससे कहा. "कहीं तुम अंधेरे में हमें चोर न समझ बैठना."

"तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है," मिश्का ने कहा. "मैं ऐसी कोई गलती नहीं करूंगा."

फिर हमने लैम्प बुझा दिया, कंबल के नीचे दुबक गए और अंधेरे में एक-दूसरे को कहानियां सुनाने लगे. मिश्का पहले, उसके बाद मैं, और जब कोस्त्या की बारी आई तो उसने हमें इतनी लंबी और डरावनी कहानी सुनाई कि मिश्का ने डर के मारे अपना सिर कंबल के नीचे छिपा लिया. कोस्त्या ने मिश्का को और डराने के लिए दीवार पर दस्तक देनी शुरू की और कहा कि दरवाजे पर कोई आया है. कोस्त्या ने वो इतनी देर तक किया कि मैं खुद भी थोड़ा डर गया और फिर मैंने उसे वो बंद करने को कहा.

अंत में कोस्त्या ने बेवकूफ़ बनाना बंद किया. मिश्का शांत हो गया और सो गया. लेकिन किसी कारण से कोस्त्या और मैं सो नहीं सके. वहां इतनी शांति थी कि हम डिब्बे में मिश्का की बीटल्स (भृंगों) की सरसराहट को साफ़ सुन सकते थे. कमरे में तहखाने जैसा अंधेरा था क्योंकि सभी खिड़कियां बंद थीं. हम बहुत देर तक चुपचाप लेटे रहे और अंधेरे में एक-दूसरे से फुसफुसाते रहे. आख़िरकार खिड़की के माध्यम से प्रकाश की एक हल्की सी झलक अंदर आई. दिन ढल रहा था. मुझे शायद झपकी आ गई होगी क्योंकि मैं किसी के खटखटाने की आवाज सुनकर एकदम चौंककर उठा.

खट-खट!! खट-खट!!

मैंने कोस्त्या को जगाया.

"लगता है कोई दरवाजे पर है."

"वो कौन हो सकता है?"

"ज़रा सुनो!"

एक मिनट के लिए सब चुप था. फिर आवाज़ आई: खट-खट!! खट-खट!!

"हां, कोई दस्तक दे रहा है," कोस्त्या ने कहा. "वो कौन हो सकता है?"

हम अपनी सांस रोके इंतजार करते रहे. अब क्योंकि दस्तक नहीं हुई तब हमने सोचा कि कहीं हम सपना तो नहीं देख रहे थे.

फिर हमने उसे दोबारा सुना: खट-खट!! खट-खट!!

"चुप," कोस्त्या फुसफुसाया. "चलो दिखावा करते हैं कि हमने उसे सुना ही नहीं. फिर शायद वे चले जाएं."

हमने कुछ और देर इंतजार किया, लेकिन फिर दोबारा से आवाज़ आई: खट-खट!!

"देखो वे अभी भी वहां मौजूद हैं!" कोस्त्या ने कहा.

"शायद वो कोई शहरी व्यक्ति होगा?" मैंने कहा.

"भला इस समय कौन आएगा? नहीं, चलो चुपचाप लेटते हैं और प्रतीक्षा करते हैं. अगर फिर से दस्तक होगी, तो फिर हम पूछेंगे कि वो कौन है."

हमने इंतजार किया, लेकिन किसी ने दस्तक नहीं दी.

"शायद वे चले गए हों," कोस्त्या ने कहा.

हम अभी कुछ बेहतर महसूस करना शुरू ही कर रहे थे कि तभी दोबारा टैपिंग की आवाज आई: खट-खट!! खट-खट!!

मैं बिस्तर पर बैठ गया. "चलो," मैंने कहा. "चलो चलते और पूछते हैं कि वो कौन है."

हम दबे पांव दरवाजे की ओर बढ़े.

"वहां कौन है?" कोस्त्या ने पूछा.
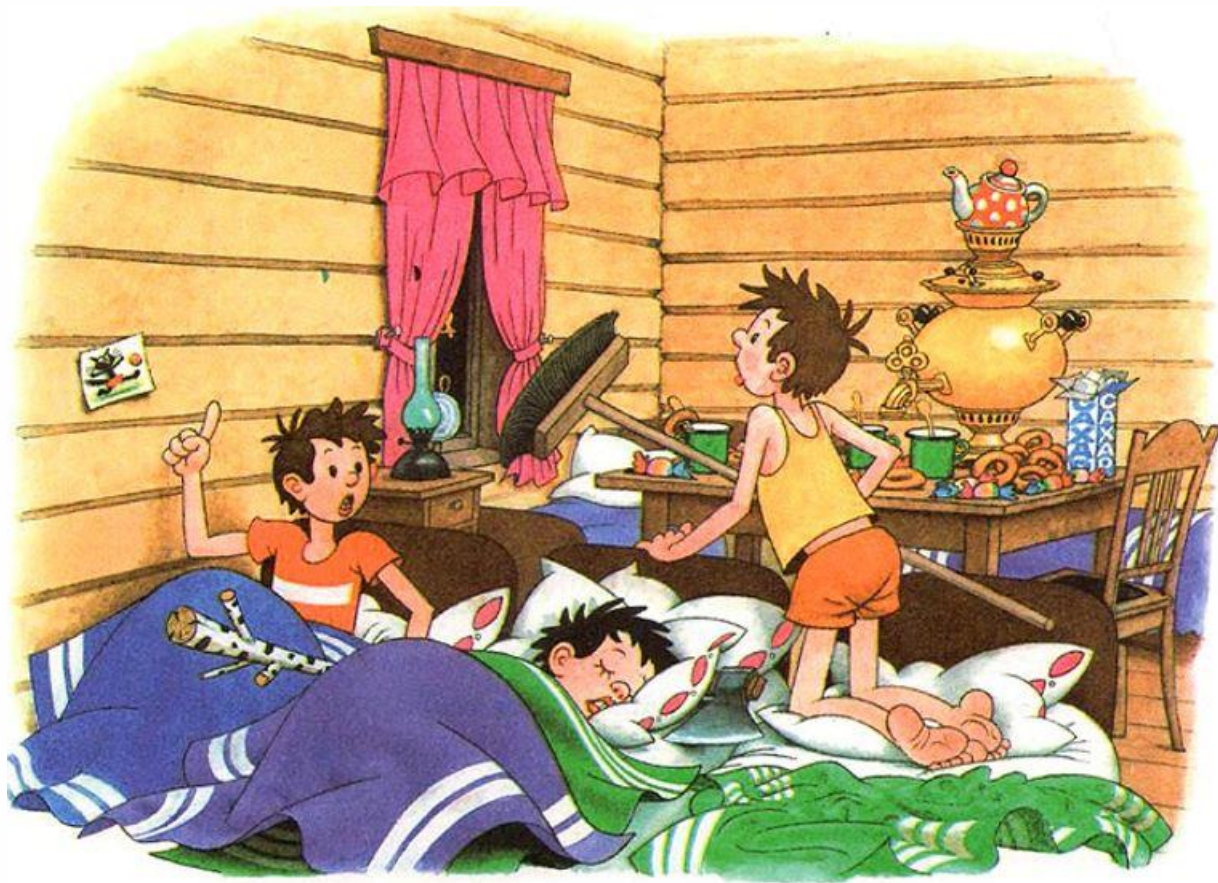
लेकिन कोई जवाब नहीं मिला.

"वहां कौन है?" इस बार कोस्त्या ने जोर से दोहराया.

कोई उत्तर नहीं मिला.

"वहां कौन है?"

कोई जवाब नहीं. "शायद जो होगा, वो चला गया होगा," मैंने कहा.

हम लोग वापस लौटे. जैसे ही हम अपने बिस्तर पर लेटे:

खट-खट!! खट-खट!!

हम दरवाजे की ओर लपके. "वहां कौन है?"

एकदम मौन सन्नाटा.

"क्या वो बहरा है, क्यों?" कोस्त्या ने कहा. हम खड़े होकर सुनते रहे. तभी हमें बाहर कुछ सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी.

"कौन है भाई?"

लेकिन किसी ने भी जवाब नहीं दिया.

हम वापस बिस्तर पर लौटे और सांस रोककर बैठे रहे. अचानक हमने अपने ऊपर की छत पर सरसराहट सुनी, और फिर कुछ टकराया - फिर टिन की छत पर धमाका हुआ.

"अब लगता है कि वे छत पर चढ़ गए हैं!" कोस्त्या ने कहा.

इस बार टकराने की आवाज़ छत के दूर से आई.

"ऐसा लगता है जैसे वो एक नहीं दो हैं," मैंने कहा. "मुझे आश्चर्य है कि वे छत पर क्या कर रहे हैं."

हम बिस्तर से उठे और हमने कमरे का वो दरवाज़ा बंद कर दिया जो छत की ओर जाता था. हमने खाने की मेज़ को दरवाज़े से सटा दिया और उसके सामने एक और छोटी मेज़ और फिर एक बिस्तर लगा दिया. लेकिन छत पर धमाचौकड़ी ज़ारी रही, कभी एक तरफ, कभी दूसरी तरफ, कभी दोनों तरफ एक-साथ. ऐसा लग रहा था जैसे ऊपर तीन लोग हों. तभी कोई फिर से दरवाज़ा खटखटाने लगा.

"शायद कोई हमें डराने के लिए ही ऐसा कर रहा है," मैंने कहा.

कोस्त्या ने कहा, "हमें बाहर जाना चाहिए और उनको अच्छा सबक सिखाना चाहिए और हमें जगाए रखने के लिए उनकी अच्छी पिटाई लगानी चाहिए."

"इस बात की अधिक संभावना है कि वे हमारी अच्छी तरह से पिटाई लगाएंगे. हो सकता है कि उनकी संख्या बीस हो!"

अब तक मिश्का गहरी नींद में सो रहा था. उसने कुछ भी नहीं सुना था.

"शायद बेहतर होगा कि हम उसे जगा दें," मैंने सुझाव दिया.

"नहीं. उसे सोने दो," कोस्त्या ने कहा. "तुम्हें पता है कि वो कितना डरपोक है. वो बहुत डर जाएगा."

जहां तक हमारी बात है, हम अब बिस्तर छोड़ने को तैयार थे. अंत में कोस्त्या उस सब को बर्दाश्त नहीं कर सका. वो बिस्तर पर चढ़ गया और बोला:

"मैं इस सब बकवास से तंग आ चुका हूं. मुझे उनकी कोई परवाह नहीं. वे चाहें तो छत पर कलाबाज़ियां लगाते हुए अपनी गर्दन तोड़ डालें! मैं तो सोने जा रहा हूं."

मैंने मिश्का के तकिये के नीचे से चाकू निकाला और उसे अपनी बगल में रख लिया और फिर एक झपकी लेने की कोशिश में लेट गया. ऊपर का शोर धीरे-धीरे शांत हो गया. फिर टिन की छत पर बारिश की थपकी जैसी आवाज़ आने लगी. फिर मुझे नींद आ गयी.

दरवाज़े पर एक ज़ोरदार धमाके से हमारी नींद खुली. बाहर दिन का तेज़ उजाला था और आंगन में बहुत हंगामा हो रहा था. मैंने चाकू उठाया और दरवाजे की ओर भागा.

"वहां कौन है?" मैंने चिल्लाकर कहा.

"दरवाजा खोलो दोस्तों! तुम्हें क्या हो गया है? हम आधे घंटे से दरवाजा खटखटा रहे हैं!" वो वित्या था, हमारा पायोनीयर नेता!

मैंने दरवाज़ा खोला और फिर बाकी लड़के कमरे में जमा हो गए. वित्या ने चाकू को देखा.

"वो किसके लिए?" वित्या ने पूछा. "और यहां दरवाज़े से सटाकर मेज़ और बिस्तर लगाने का क्या मतलब?"

कोस्त्या और मैंने बताया कि रात के दौरान क्या हुआ था. लेकिन लड़कों ने हमारी बात पर विश्वास नहीं किया. वे हम पर हंसे और कहा कि हमने केवल डर के मारे वो कल्पना की होगी. कोस्त्या और मैं इतने दुखी हुए कि हम रो सकते थे.

तभी ऊपर से किसी के खटखटाने की आवाज आई.

"चुप रहो!" कोस्त्या चिल्लाया और उसने अपनी उंगली उठाई.

लड़के शांत हो गये. खट-खट!! खट-खट!! का शोर स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहा था. लड़कों ने एक-दूसरे की ओर देखा. कोस्त्या और मैंने दरवाज़ा खोला और हम बाहर गये. बाकी लोगों ने हमारे पीछे आए. हम घर से थोड़ी दूर गए और वहां से हमने छत की ओर देखा. वहां पर एक सादा, साधारण कौवा बैठा था. वो किसी चीज़ पर लगातार अपनी चोंच मार रहा था, और उसकी चोंच टिन की छत से टकराकर खट-खट!! की आवाज़ कर रही थी.

जब लड़कों ने कौवे को देखा तो वे ज़ोर से हंसने लगे. फिर कौवे ने डर के मारे अपने पंख फड़फड़ाए और वो उड़ गया.

फिर कुछ लड़के एक सीढ़ी उठाकर लाए और वे छत पर चढ़ गए.

"छत पिछले साल के रोवन फलों से ढकी हुई है!" उन्होंने चिल्लाकर हमें बुलाया. "कौवा उन्हीं फलों पर अपनी चोंच मार रहा था."

हमें आश्चर्य हुआ कि रोवन के फल वहां कैसे पहुंचे. तभी हमने देखा कि रोवन-पेड़ों की शाखायें घर के चारों ओर फैली हुई थीं. शरद ऋतु में जब रोवन पक जाते होंगे तो उनके फल सीधे छत पर जाकर गिरते होंगे.

"लेकिन फिर हमारा दरवाज़ा किसने खटखटाया होगा?" मैंने पूछा .

"हां," कोस्त्या ने कहा. "कौवे हमारे दरवाज़े को क्यों थपथपा रहे थे? मुझे लगता है कि आप कहेंगे कि कौवे अंदर आना चाहते थे और हमारे साथ रात बिताना चाहते थे."

उसका उत्तर कोई नहीं दे सका. वे सभी दरवाजे की जांच करने के लिए दौड़े. वित्या ने दरवाजे से एक रोवन का फल उठाया.

"कौवों ने दरवाज़ा बिल्कुल भी नहीं खटखटाया. वे दरवाज़े से रोवन के फल उठा रहे थे, और आपने सोचा कि वे दरवाज़ा खटखटा रहे थे."

हमने खुद देखा और फिर सुनिश्चित हुए क्योंकि दरवाजे के आसपास कई रोवन के फल बिखरे हुए थे.

लड़के हम पर खूब हंसे. "क्या वे सच्चे हीरो नहीं हैं! देखो, वे तीनों एक छोटे से कौवे से डर गए!"

"असल में हम केवल दो ही थे," मैंने कहा. "क्योंकि मिश्का पूरे समय सोता रहा."

"तुम अच्छे निकले मिश्का!" लड़के चिल्लाए. "तुम ऐसे अकेले निकले जो कौवे से नहीं डरे?"

"मैं बिल्कुल भी नहीं डरा," मिश्का ने कहा. "मैं तो सो गया और मैंने कुछ भी नहीं सुना."

तब से मिश्का को बहादुर और मुझे तथा कोस्त्या को कायर माना जाने लगा.

अंत